NEERAJ®

Serving Education for Last 40 Years

मूल्यपरक शिक्षा

(Value Education)

B.E.D.S.V.-101

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Ved Prakash Sharma*

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

मूल्यपरक शिक्षा
(Value Education)

Sample Question Paper–1 (Solved) 1

Sample Question Paper–2 (Solved) 1

Sample Question Paper–3 (Solved) 1

Sample Question Paper–4 (Solved) 1

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

खंड-1 : वैचारिक ढाँचा (CONCEPTUAL FRAMEWORK)

1. सामाजिक विकृतियाँ एवं मूल्यपरक शिक्षा की आवश्यकता 1
(Social Malaise and the Need for Value Education)

2. नैतिकता एवं नैतिक शिक्षा की अवधारणा 9
(Concept of Morality and Moral Education)

3. नैतिकता के आयाम 18
(Dimensions of Morality)

4. लोकतंत्र के स्तंभ : शांत एवं सद्भावपूर्ण जीवनयापन 26
(Pillars of Democracy: Living in Peace and Harmony)

खंड-2 : बदलती संस्कृति एवं मानवीय मूल्य
(CHANGING CULTURE AND HUMAN VALUES)

5. भारतीय संस्कृति एवं मानवीय मूल्य 34
(Indian Culture and Human Values)

6. भारतीय दर्शन में निहित मूल्य 43
(Values Enshrined in Indian Philosophy)

7. भारतीय समाज में सांस्कृतिक बहुलवाद 51
(Cultural Pluralism in Indian Society)

8. सतत विकास हेतु मूल्य 59
(Values for Sustainable Development)

खंड-3 : सैद्धांतिक संस्थापना (THEORETICAL FOUNDATIONS)

9. अच्छाई के सिद्धांत 68
(Theories of Goodness)

10. आचरण के सिद्धांत 73
(Theories of Conduct)

11. मानव आचरण में कारण एवं भावनाएँ 79
(Reason and Emotions in Human Conduct)

12. चरित्र और व्यक्तित्व 86
(Character and Personality)

खंड-4 : सामाजिक गतिशीलता और मूल्य विकास (SOCIAL DYNAMICS AND VALUE DEVELOPMENT)

13. समाजीकरण की प्रक्रिया 93
(Process of Socialization)

14. सामाजिक संपर्क और मानवीय मूल्य 105
(Social Interaction and Human Values)

15. मूल्य : संघर्ष और समाधान 114
(Values: Conflict and Resolution)

16. मानव समायोजन की प्रक्रिया 123
(Process of Human Adjustment)

खंड-2 : सामाजिक संबंध (SOCIAL LINKAGES)

17. सामाजिक संस्थाओं के माध्यम से मूल्य विकास : परिवार और प्रतिवेश 130
(Value Development through Social Institutions Family and Neighbourhood)

18. स्कूल और सहकर्मी 138
(School and Peer)

19. माता-पिता की भूमिका 147
(Role of Parents)

20. मूल्य विकास पर मीडिया का प्रभाव 153
(Influence of Media on Value Development)

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

Sample

QUESTION PAPER - 1

(Solved)

मूल्यपरक शिक्षा
(Value Education)

B.E.D.S.V.-101

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट: किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

प्रश्न 1. डेलर्स कमीशन की रिपोर्ट में वर्णित दो तनावों का उल्लेख करें।

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-1, पृष्ठ-3, प्रश्न 2

प्रश्न 2. स्लॉटिन की कहानी से आपको क्या समझ में आया?

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-3, पृष्ठ-19, प्रश्न 1

प्रश्न 3. चित्रकला के विभिन्न विद्यालय कौन-से हैं?

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-5, पृष्ठ-37, प्रश्न 1

प्रश्न 4. भारतीय संदर्भ में सांस्कृतिक बहुलवाद को परिभाषित करें?

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-7, पृष्ठ-54, प्रश्न 2

प्रश्न 5. अच्छाई के बारे में उपयोगितावादी दृष्टिकोण क्या है?

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-9, पृष्ठ-69, प्रश्न 1

प्रश्न 6. जैव रसायन एवं ग्रंथि संबंधी विशेषताओं पर आधारित चार प्रकार के व्यक्तित्व पैटर्न के नाम बताइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-12, पृष्ठ-87, प्रश्न 1

प्रश्न 7. संघर्ष के कारण बताएं।

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-15, पृष्ठ-118, प्रश्न 2

प्रश्न 8. आपके अनुसार मूल्य विकास का सबसे महत्त्वपूर्ण चरण कौन-सा है?

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-17, पृष्ठ-132, प्रश्न 2

प्रश्न 9. मूल्य विकास के उदाहरण दीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-19, पृष्ठ-150, प्रश्न 1

प्रश्न 10. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) नैतिकता और न्याय

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-3, पृष्ठ-19, 'नैतिकता और न्याय'

(ख) संगीत और नृत्य

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-5, पृष्ठ-35, 'संगीत और नृत्य'

(ग) सतत विकास के लिए शिक्षा

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-8, पृष्ठ-59, 'सतत विकास के लिए शिक्षा'

(घ) सार्वभौमिकता

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-10, पृष्ठ-73, 'सार्वभौमिकता'

■■

Sample

QUESTION PAPER - 2

(Solved)

मूल्यपरक शिक्षा
(Value Education)

B.E.D.S.V.-101

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट: किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

प्रश्न 1. शिक्षा और मूल्य शिक्षा के बीच क्या संबंध है?

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-1, पृष्ठ-5, प्रश्न 5

प्रश्न 2. हेगेल की तर्कसंगतता की द्वंद्वात्मकता के चार मानदंडों का वर्णन करें।

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-2, पृष्ठ-14, प्रश्न 6

प्रश्न 3. शिक्षा में स्वतंत्रता का क्या अर्थ है?

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-4, पृष्ठ-30, प्रश्न 5

प्रश्न 4. एसडी के लिए शिक्षा क्यों महत्त्वपूर्ण है?

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-8, पृष्ठ-62, प्रश्न 2

प्रश्न 5. सामान्य अच्छा सिद्धांत क्या है?

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-10, पृष्ठ-75, प्रश्न 3

प्रश्न 6. तर्कसंगत परोपकारी व्यक्ति को परिभाषित करें।

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-12, पृष्ठ-90, प्रश्न 5

प्रश्न 7. समाज के तीन सामाजिक संसाधन क्या हैं?

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-15, पृष्ठ-118, प्रश्न 3

प्रश्न 8. सहकर्मियों की क्या भूमिका है?

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-18, पृष्ठ-143, प्रश्न 1

प्रश्न 9. माता-पिता घर में मूल्योन्मुख माहौल कैसे बना सकते हैं? किन्हीं दो को उल्लिखित करें?

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-19, पृष्ठ-151, प्रश्न 3

प्रश्न 10. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) नैतिकता और नीतिशास्त्र में अंतर

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-3, पृष्ठ-20, प्रश्न 3

(ख) भारतीय सांस्कृतिक विविधता

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-7, पृष्ठ-55, प्रश्न 3

(ग) सुखवाद/प्रेमवाद

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-9, पृष्ठ-68, 'सुखवाद/प्रेमवाद'

(घ) नैतिक शिक्षा में भावनाएँ

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-11, पृष्ठ-79, 'नैतिक शिक्षा में भावनाएँ'

■■

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

मूल्यपरक शिक्षा
(Value Education)

सामाजिक विकृतियाँ एवं मूल्यपरक शिक्षा की आवश्यकता
(Social Malaise and the Need for Value Education)

1

परिचय

बच्चे विशाल क्षमता वाले बीज की तरह होते हैं, जिन्हें विकास के लिए पोषणयुक्त वातावरण की आवश्यकता होती है। शिक्षा केवल स्कूलों से नहीं, बल्कि व्यापक सामाजिक और मनोवैज्ञानिक परिवेश को शामिल करती है। घर, समुदाय और साथी नैतिक विकास को महत्त्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं। बच्चे इन वातावरणों से अनजाने में व्यवहार ग्रहण कर लेते हैं। सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ उनके विकास को आकार देता है, जो प्रभावशाली युवा दिमागों के लिए महत्त्वपूर्ण है। शिक्षा को बहुमुखी व्यक्तिगत विकास-सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, नैतिक और बौद्धिक, विकसित करना चाहिए। यह समग्र शिक्षा सामाजिक विकृतियों का मुकाबला करती है, बच्चों को अपनी दुनिया के साथ सकारात्मक रूप से जुड़ने के लिए सक्षम बनाती है।

अध्याय का विहंगावलोकन

भारतीय समाज की विकृतियाँ

भारत में विभिन्न सामाजिक विकृतियाँ हैं-भौतिक संपदा और शक्ति का जुनून आध्यात्मिक मूल्यों को नष्ट कर रहा है; बिगड़ते सामाजिक वातावरण के कारण गरीबी, बेरोजगारी और टूटे रिश्ते जैसी मानसिक स्वास्थ्य समस्याएं पैदा हो रही हैं। ऐसे बच्चे हैं, जो उपेक्षा, गरीबी और शिक्षा की कमी से पीड़ित हैं; तेजी से शहरी विकास और कमजोर संस्थानों द्वारा फैलाया गया व्यापक भ्रष्टाचार, अपराध और महिलाओं एवं बच्चों के खिलाफ व्यापक हिंसा। 'वसुधैव कुटुंबकम' जैसी आध्यात्मिक शिक्षाओं के बावजूद, धार्मिक और जातिगत विभाजन कायम हैं। धर्म का सार-मानवता और समानता-अक्सर भौतिकवाद और शोषण द्वारा अस्पष्ट हो जाता है। आह्वान केवल धार्मिक अनुष्ठानों और संस्कारों से अधिक, सार्वभौमिक मूल्यों पर जोर देते हुए, बच्चों में आध्यात्मिक विकास और करुणा को बढ़ावा देने का है। दुर्भाग्य से, अहिंसा और करुणा की धार्मिक शिक्षाएँ व्यावहारिक व्यवहार में परिणत होने में विफल रहती हैं, हिंसा बनी रहती है और कभी-कभी धर्म द्वारा उचित भी ठहरा दी जाती है। सैद्धांतिक मूल्यों और व्यावहारिक व्यवहार के बीच असमानता बहुत अधिक है, पाखंड और सामाजिक अन्याय व्याप्त है। भ्रष्टाचार, भौतिकवाद और मानवीय संपर्क की हानि ने नैतिक और आध्यात्मिक शून्य को और गहरा कर दिया है। डेलर्स कमीशन की रिपोर्ट '21वीं शताब्दी के लिए शिक्षा' (1996) में दावा किया गया है कि विभिन्न सामाजिक तनावों के बीच शांति और सामाजिक न्याय प्राप्त करने के लिए शिक्षा महत्त्वपूर्ण है। इनमें वैश्विक नागरिकता को स्थानीय जड़ों के साथ संतुलित करना, परंपरा को छोड़े बिना आधुनिकता को अपनाना, अवसर की समानता के साथ प्रतिस्पर्धा में सामंजस्य बिठाना और भौतिक आवश्यकताओं के साथ आध्यात्मिक मूल्यों को एकीकृत करना शामिल है। शिक्षा सामाजिक चेतना को बढ़ावा देती है, जो जाति, पंथ और धन के विभाजन से परे, समानता और सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा देती है।

शिक्षा एवं मूल्यपरक शिक्षा का संबंध

मौलिक रूप से शिक्षा का लक्ष्य केवल ज्ञान और कौशल से कहीं अधिक विकास करना है। इसे अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए मूल्यों और नैतिक शिक्षा की आवश्यकता है। एक शिक्षित व्यक्ति पूरी तरह से सक्षम नहीं होता है, बल्कि सामाजिक रूप से सार्थक दृष्टिकोण और व्यवहार का प्रतीक होता है। नैतिक विकास के बिना, शिक्षा केवल तकनीकी योग्यता प्रदान करती है, जीव विज्ञान से मानवता में परिवर्तन की उपेक्षा करती है। सच्ची शिक्षा संज्ञानात्मक और मनोवैज्ञानिक कौशल को एक मूल्य प्रणाली में एकीकृत करती है, एक समावेशी समाज के भीतर अच्छी तरह से समायोजित व्यक्तियों को बढ़ावा देती है। शांतिपूर्ण सहअस्तित्व मानवीय मूल्यों पर आधारित शिक्षा की मांग करता है, जो व्यक्तिगत विकास के साथ-साथ सामूहिक हितों को प्राथमिकता देती है। अंततः, शिक्षा का सार उन व्यक्तियों को आकार देने में निहित है, जो विचारों, भावनाओं और कार्यों में मूल्यों का प्रदर्शन करते हैं।

मूल्योन्मुख शिक्षा की आवश्यकता

हमारे नैतिक आदर्शों और वास्तविक व्यवहार के बीच विरोधाभासों ने हिंसा, भ्रष्टाचार और अपराध जैसे सामाजिक खतरों

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

को उत्पन्न कर दिया है। नैतिक विकास के बजाय दक्षता पर केंद्रित हमारी शिक्षा प्रणाली अच्छे इंसान पैदा करने में विफल रहती है। नई शिक्षा नीति (1986) ने इस दोष को पहचाना और मूल्य-उन्मुख शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया। भारतीय समाज में व्यापक भ्रष्टाचार एक नैतिक पतन को दर्शाता है-डॉक्टर बिना भुगतान के इलाज से इनकार करते हैं, सार्वजनिक अधिकारी रिश्वतखोरी में लिप्त होते हैं और लाभ के लिए आवश्यक वस्तुओं में मिलावट की जाती है। यह गिरावट भारत की घटती मानव विकास सूचकांक रैंकिंग में स्पष्ट है। ऐसी वास्तविकताएँ समग्र विकास को प्राथमिकता देने और पाठ्यक्रम में मूल्य शिक्षा को शामिल करने, न्याय और सामूहिक कल्याण को प्राथमिकता देने वाले नैतिक नागरिकों को बढ़ावा देने के लिए शिक्षा के पुनर्मूल्यांकन का आग्रह करती हैं। मानवता एक परस्पर जुड़ा हुआ परिवार है, जहां नस्ल, धर्म और आर्थिक स्थिति के मतभेदों को वैश्विक एकता में रूकावट नहीं बनना चाहिए। भावी पीढ़ियों के लिए हमारी पारिस्थितिकी को क्रूर शोषण से बचाना, समान उपभोग और विकास की सीमा की वकालत करना महत्त्वपूर्ण है। घृणा, लालच और ईर्ष्या जैसी विनाशकारी भावनाओं पर काबू पाने के लिए प्रेम, करुणा और सहयोग को बढ़ावा देना आवश्यक है। वर्तमान सामाजिक अस्वस्थता से निपटने के लिए शारीरिक, बौद्धिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक आयामों को स्वीकार करते हुए समग्र शिक्षा आवश्यक है।

शिक्षकों की भूमिका

शिक्षक व्यक्तिगत और सहयोगात्मक रूप से छात्रों के सीखने और व्यक्तिगत विकास को बढ़ावा देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मूल्यों को प्रभावी ढंग से प्रदान करने के लिए, शिक्षकों को स्वयं उन मूल्यों को अपनाना होगा। पाठ्यक्रम में मूल्य शिक्षा को शामिल करना ही पर्याप्त नहीं है; शिक्षण और सीखने की प्रक्रियाओं को स्वाभाविक रूप से इन मूल्यों को प्रतिबिंबित करना चाहिए। शिक्षक अपनी बातचीत में सादगी, सम्मान और न्याय का प्रदर्शन करते हुए उदाहरण देकर प्रेरित करते हैं। वे सांस्कृतिक विविधता का जश्न मनाते हुए, छात्रों की पृष्ठभूमि और पूर्व ज्ञान के आधार पर समावेशी कक्षाओं का निर्माण करते हैं। सांस्कृतिक रूप से सूचित शिक्षण कक्षा और समुदाय के भीतर सम्मान और सहयोग को बढ़ावा देता है। समावेशी शिक्षण विधियों के माध्यम से, शिक्षक छात्रों में सकारात्मक मूल्यों का विकास करते हैं, सामाजिक बुराइयों से निपटने में सामाजिक प्रयासों में योगदान देते हैं।

गतिविधियाँ

अनुशासन–समानता को बढ़ावा देने वाला एक सकारात्मक, समावेशी कक्षा लोकाचार बनाएं, जहां बच्चे सुरक्षित, मूल्यवान महसूस करें और स्वतंत्र रूप से विचार और अनुभव साझा करें।

चिंतन–1-4 मिनट तक शांत बैठना सांस और दिल की धड़कन को नियंत्रित करता है, शरीर को शांत करता है, मन को शांत करता है, ध्यान, एकाग्रता और आत्म-जागरूकता को बढ़ाता है।

कहानी सुनाना–कहानियों को पाठ प्रोत्साहन के रूप में उपयोग करना लाभदायक है। विभिन्न जागरूकता स्तरों तक पहुँचता है, भावनाओं को जगाता है और ध्यान आकर्षित करता है। कहानियाँ श्रोताओं को भविष्य की चुनौतियों में सहायता करते हुए, व्यक्तिगत अनुभवों से सबक सीखने की अनुमति देती हैं।

चर्चा–शिक्षक के नेतृत्व वाली चर्चाएँ सावधानीपूर्वक पूछताछ के माध्यम से समझ को गहरा करती हैं और मूल्यों को व्यक्तिगत अनुभवों में परिवर्तित करती हैं।

आनंद–मनोरंजक गतिविधियाँ मूल्यों को सुदृढ़ करती हैं। पाठों को समृद्ध बनाने, स्कूली जीवन पर सकारात्मक प्रभाव डालने के लिए आनंद को प्रोत्साहित करें। गतिविधियों में कहानी सुनाना, भूमिका निभाना, नाटक, त्योहार, पर्यावरण परियोजनाएं और सामुदायिक सेवा, मूल्य संवर्धन को बढ़ावा देना शामिल है।

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. भारतीय समाज में विद्यमान किन्हीं दो सामाजिक विकृतियों की चर्चा करें।

उत्तर–भारतीय समाज में, विभिन्न सामाजिक विकृतियाँ गहरी जड़ें जमा चुकी चुनौतियों को दर्शाती हैं, जो व्यक्तियों और समुदायों को प्रभावित करती हैं। दो महत्त्वपूर्ण बुराइयों में जाति-आधारित भेदभाव का बने रहना और भ्रष्टाचार का प्रसार शामिल है।

1. जाति-आधारित भेदभाव–इसे खत्म करने के उद्देश्य से कानूनी उपायों और सामाजिक आंदोलनों के बावजूद भारत में जातिगत भेदभाव एक गंभीर मुद्दा बना हुआ है। सदियों से भारतीय समाज में गहराई से जमी हुई जाति व्यवस्था, व्यक्तियों को उनकी सामाजिक स्थिति, व्यवसाय और संसाधनों तक पहुँच का निर्धारण करते हुए, पदानुक्रमित समूहों में वर्गीकृत करती है। जातिगत भेदभाव को गैर-कानूनी घोषित करने और समानता को बढ़ावा देने वाले संवैधानिक प्रावधानों के बावजूद, यह सामाजिक बीमारी लाखों भारतीयों को प्रभावित कर रही है। अस्पृश्यता कायम है और कुछ समुदायों के साथ 'अछूत' या दलित जैसा व्यवहार किया जाता है, जो प्रणालीगत भेदभाव और बहिष्कार का सामना करते हैं। यह भेदभाव विभिन्न रूपों में प्रकट होता है, जिसमें सार्वजनिक स्थानों, शिक्षा, रोजगार के अवसरों और सामाजिक सेवाओं तक पहुँच से इनकार करना शामिल है। अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम जैसे विधायी उपायों के बावजूद, दलितों के खिलाफ हिंसा और दुर्व्यवहार की घटनाएं जारी हैं, जो गहरे सामाजिक पूर्वाग्रहों को दर्शाती हैं। जातिगत भेदभाव की बुराई न केवल सामाजिक एकजुटता, बल्कि व्यक्तिगत गरिमा और कल्याण को भी प्रभावित करती है। यह असमानता को कायम रखता है और सामाजिक गतिशीलता में बाधा डालता है, व्यक्तियों और समुदायों को नुकसान के चक्र में फंसाता है। जाति-आधारित भेदभाव की निरंतरता गहरी जड़ें जमा चुके पूर्वाग्रहों को दूर करने और वास्तविक सामाजिक समानता को बढ़ावा देने के लिए सामाजिक सुधार, समावेशी नीतियों और समुदाय-स्तरीय हस्तक्षेप की दिशा में निरंतर प्रयासों की आवश्यकता को दर्शाती है।

2. भ्रष्टाचार–भ्रष्टाचार एक और व्यापक बीमारी है, जो भारत के सामाजिक और आर्थिक ताने-बाने को कमजोर करती है। धन और सत्ता की लालसा, सरल जीवन शैली के प्रति असंतोष के साथ मिलकर, समाज के विभिन्न क्षेत्रों में व्यापक भ्रष्टाचार को

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

बढ़ावा देती है। भारत में भ्रष्टाचार विभिन्न रूप लेता है, जिसमें रिश्वतखोरी, गबन, धोखाधड़ी और भाई-भतीजावाद शामिल हैं, जो सरकारी संस्थानों, व्यावसायिक क्षेत्रों और रोजमर्रा की बातचीत में व्याप्त है।

भ्रष्टाचार संस्थानों में जनता के विश्वास को खत्म करता है, शासन संरचनाओं को कमजोर करता है और आर्थिक अवसरों को विकृत करता है। यह बहुसंख्यकों की कीमत पर विशेषाधिकार प्राप्त कुछ लोगों का पक्ष लेकर असमानता को कायम रखता है, संसाधनों और सेवाओं तक समान पहुँच में बाधा डालता है। यह बिन्दु सामाजिक विघटन को बढ़ाने वाले भ्रष्टाचार, पारस्परिक विश्वास और सामुदायिक एकजुटता को तोड़ने में योगदान देने की ओर भी इशारा करता है। भ्रष्टाचार को संबोधित करने के लिए कानूनी ढाँचे, संस्थागत पारदर्शिता और नागरिक सहभागिता सहित व्यापक सुधारों की आवश्यकता है। इस बीमारी से निपटने के लिए स्वतंत्र निरीक्षण निकायों की स्थापना, जवाबदेही तंत्र को लागू करना और नैतिक नेतृत्व को बढ़ावा देना जैसे भ्रष्टाचार विरोधी उपाय आवश्यक हैं। इसके अतिरिक्त, शिक्षा और जन जागरूकता अभियानों के माध्यम से अखंडता और नैतिक व्यवहार की संस्कृति को बढ़ावा देना एक ऐसे समाज के निर्माण में महत्त्वपूर्ण है, जहां भ्रष्टाचार बर्दाश्त नहीं किया जाता है।

प्रश्न 2. डेलर्स कमीशन की रिपोर्ट में वर्णित दो तनावों का उल्लेख करें।

उत्तर–डेलर्स कमीशन की रिपोर्ट 21वीं शताब्दी की चुनौतियों के केंद्र में कई तनावों की पहचान करती है, जो शिक्षा और मानव विकास को प्रभावित करने वाली जटिल सामाजिक गतिशीलता को दर्शाती है। रिपोर्ट में उजागर किए गए दो महत्त्वपूर्ण तनाव इस प्रकार हैं–

1. वैश्विक और स्थानीय पहचान के बीच तनाव–यह रिपोर्ट स्थानीय समुदायों और राष्ट्रीय पहचान में जड़ें जमाए रखते हुए व्यक्तियों को वैश्विक दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता पर जोर देती है। वैश्वीकरण और तेजी से तकनीकी प्रगति की विशेषता वाली दुनिया में, व्यक्तियों को अपने अद्वितीय स्थानीय संदर्भों और सांस्कृतिक विरासत को खोए बिना विविध सांस्कृतिक प्रभावों और वैश्विक नेटवर्क को नेविगेट करना चाहिए। यह तनाव शैक्षिक संदर्भों में विशेष रूप से प्रासंगिक है, जहां शिक्षकों को छात्रों को वैश्विक नागरिक बनने के लिए तैयार करने की चुनौती का सामना करना पड़ता है, जो सांस्कृतिक विविधता की सराहना करते हैं और वैश्विक मुद्दों से जुड़ते हैं, साथ ही अपने स्थानीय समुदायों के भीतर अपनेपन और पहचान की मजबूत भावना को बढ़ावा देते हैं। वैश्विक और स्थानीय के बीच तनाव के लिए स्थानीय ज्ञान, परंपराओं और मूल्यों के महत्त्व पर जोर देते हुए वैश्विक परिप्रेक्ष्य को पाठ्यक्रम और शिक्षाशास्त्र में एकीकृत करने वाली शैक्षिक रणनीतियों की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए, शैक्षिक कार्यक्रम छात्रों के क्षितिज को व्यापक बनाने और विविध संस्कृतियों और समाजों के प्रति सहानुभूति पैदा करने के लिए बहुसांस्कृतिक दृष्टिकोण, वैश्विक जागरूकता और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को शामिल कर सकते हैं। साथ ही, अपनी जड़ों के प्रति गौरव और सम्मान पैदा करने के लिए स्थानीय सांस्कृतिक विरासत, भाषाओं और परंपराओं को बढ़ावा देने के प्रयास किए जाने चाहिए। इस तनाव को उजागर करने में वैश्विक अंतर्संबंध को अपनाने और स्थानीय पहचान का पोषण करने, सांस्कृतिक विविधता की समृद्धि को पहचानने और समुदायों के भीतर अपनेपन और एकजुटता की भावना को बढ़ावा देने के बीच संतुलन बनाना शामिल है।

2. परंपरा और आधुनिकता के बीच तनाव–रिपोर्ट पारंपरिक मूल्यों और प्रथाओं को आधुनिकता और सामाजिक-आर्थिक प्रगति की अनिवार्यताओं के साथ सामंजस्य बिठाने की चुनौती पर प्रकाश डालती है। जैसे-जैसे समाज तकनीकी नवाचार, शहरीकरण और वैश्वीकरण से प्रेरित तेजी से परिवर्तन से गुजरता है, पारंपरिक सांस्कृतिक मानदंडों को संरक्षित करने और नई सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी वास्तविकताओं को अपनाने के बीच अक्सर तनाव होता है। शिक्षा के संदर्भ में, यह तनाव पाठ्यक्रम सामग्री, शिक्षण पद्धतियों और शैक्षिक लक्ष्यों पर बहस में प्रकट होता है। शिक्षक पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों और सांस्कृतिक मूल्यों को आधुनिक शैक्षिक ढाँचे में एकीकृत करने से जूझते हैं, जो छात्रों को समकालीन चुनौतियों और अवसरों के लिए तैयार करते हैं। परंपरा और आधुनिकता के बीच की खाई को पाटने के प्रयासों के लिए नवीन दृष्टिकोण की आवश्यकता है, जो वर्तमान सामाजिक आवश्यकताओं और आकांक्षाओं को संबोधित करने के लिए पारंपरिक ज्ञान का लाभ उठा सके। उदाहरण के लिए, शैक्षिक पहल में स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों, पारिस्थितिकी स्थिरता, प्रथाओं और समुदाय-आधारित शिक्षण दृष्टिकोणों को आधुनिक शैक्षिक संदर्भों में शामिल किया जा सकता है। इसके अलावा पीढ़ियों के बीच संवाद को बढ़ावा देना और अंतर-पीढ़ीगत ज्ञान के आदान-प्रदान को बढ़ावा देना परंपरा और आधुनिकता के बीच की खाई को पाटने में मदद कर सकता है, यह सुनिश्चित करते हुए कि उभरती सामाजिक-आर्थिक वास्तविकताओं को अपनाते हुए पारंपरिक मूल्यों को बरकरार रखा जाए।

प्रश्न 3. शिक्षा एक पीढ़ी को कैसे सशक्त बना सकती है?

उत्तर–शिक्षा व्यक्तियों को व्यक्तिगत विकास और सामाजिक उन्नति के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल और मूल्यों से लैस करके एक पीढ़ी को सशक्त बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा निम्नलिखित तरीकों से एक पीढ़ी को सशक्त बना सकती है–

1. सामाजिक चेतना और समानता को बढ़ावा देना–शिक्षा जातिगत भेदभाव, भ्रष्टाचार, गरीबी और हिंसा सहित प्रचलित सामाजिक मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ाकर सामाजिक चेतना और समानता को बढ़ावा देने के लिए उत्प्रेरक के रूप में कार्य करती है। पाठ्यक्रम सामग्री, कक्षा चर्चा और अनुभवात्मक शिक्षा के माध्यम से, शिक्षा छात्रों को सामाजिक असमानताओं और अन्यायों के प्रति संवेदनशील बना सकती है। सहानुभूति और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना को बढ़ावा दे सकती है। छात्रों को विविध दृष्टिकोणों से अवगत कराकर और उन्हें सामाजिक मुद्दों पर महत्त्वपूर्ण संवादों में शामिल करके, शिक्षा सक्रिय नागरिकता और सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन की वकालत का पोषण करती है। यह व्यक्तियों को भेदभावपूर्ण प्रथाओं को चुनौती देने, हाशिए

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

पर रहने वाले समुदायों की वकालत करने और समानता और न्याय के सिद्धांतों के आधार पर समावेशी समाज के निर्माण में योगदान देने का अधिकार देती है। साथ ही, शिक्षा अंतरसांस्कृतिक समझ, सहिष्णुता और विविधता के प्रति सम्मान को बढ़ावा देकर सामाजिक विभाजन को पाट सकती है। सांस्कृतिक विरासत का जश्न मनाने और अंतरसमूह बातचीत को बढ़ावा देकर, शिक्षा विभिन्न पृष्ठभूमि के व्यक्तियों के बीच अपनेपन और एकजुटता की भावना को बढ़ावा देती है, जिससे सामाजिक एकजुटता और सद्भाव को बढ़ावा मिलता है।

2. आलोचनात्मक सोच और समस्या-समाधान कौशल विकसित करना–शिक्षा जटिल सामाजिक चुनौतियों से निपटने के लिए आवश्यक महत्त्वपूर्ण सोच, समस्या-समाधान और निर्णय लेने के कौशल विकसित करके व्यक्तियों को सशक्त बनाती है। पूछताछ-आधारित शिक्षा, वास्तविक दुनिया की समस्याओं के विश्लेषण और व्यावहारिक संदर्भों में ज्ञान के अनुप्रयोग को प्रोत्साहित करके छात्रों के बीच रचनात्मकता, लचीलापन और अनुकूलनशीलता का पोषण करती है।

आलोचनात्मक सोच कौशल व्यक्तियों को प्रचलित मानदंडों पर सवाल उठाने, धारणाओं को चुनौती देने और भ्रष्टाचार, पर्यावरणीय गिरावट और आर्थिक असमानता जैसे प्रणालीगत मुद्दों के अभिनव समाधान तलाशने में सक्षम बनाती है। शिक्षा व्यक्तियों को परिवर्तन के सक्रिय एजेंट बनने के लिए सशक्त बनाती है, जो महत्त्वपूर्ण सामाजिक मुद्दों को संबोधित करने के लिए साक्ष्य-आधारित रणनीतियों और पहलों को तैयार करने में सक्षम हों। इसके अलावा शिक्षा डिजिटल साक्षरता और तकनीकी दक्षता को बढ़ावा देती है, जिससे व्यक्तियों को सामाजिक नवाचार और सामुदायिक विकास के लिए सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) का लाभ उठाने में सक्षम बनाया जाता है। छात्रों को डिजिटल कौशल और उद्यमशीलता दक्षताओं से लैस करके, शिक्षा उन्हें सामाजिक प्रभाव और आर्थिक सशक्तिकरण के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करने के लिए सशक्त बनाती है।

3. ईमानदारी और नैतिक नेतृत्व के मूल्यों को स्थापित करना–शिक्षा छात्रों के बीच अखंडता, नैतिक नेतृत्व और नागरिक जिम्मेदारी के मूल्यों को स्थापित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। नैतिक शिक्षा और चरित्र विकास को पाठ्यचर्या और पाठ्येतर गतिविधियों में एकीकृत करके, शिक्षा जवाबदेही, ईमानदारी और नैतिक आचरण की संस्कृति विकसित करती है। शिक्षकों द्वारा रोल-मॉडलिंग और नैतिक दुविधाओं के संपर्क के माध्यम से, शिक्षा व्यक्तियों को सैद्धांतिक निर्णय लेने और व्यक्तिगत और व्यावसायिक प्रयासों में नैतिक मूल्यों को बनाए रखने के लिए तैयार करती है। शिक्षा के माध्यम से पोषित नैतिक नेतृत्व व्यक्तियों को उदाहरण बनकर नेतृत्व करने, सकारात्मक परिवर्तन को प्रेरित करने और अपने समुदायों के भीतर विश्वास और विश्वसनीयता को बढ़ावा देने के लिए सशक्त बनाता है। इसके अलावा शिक्षा छात्रों को सामुदायिक विकास पहल, स्वयंसेवा और वकालत अभियानों में सक्रिय रूप से योगदान देने के लिए प्रोत्साहित करके नागरिक जुड़ाव और भागीदारी लोकतंत्र को बढ़ावा देती है। नागरिक कर्त्तव्य और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना को बढ़ावा देकर, शिक्षा व्यक्तियों को लोकतांत्रिक मूल्यों को बनाए रखने और जनकल्याण को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध और जागरूक नागरिक बनने का अधिकार देती है।

प्रश्न 4. दो गतिविधियों का उल्लेख करें, जो मूल्य बोध की ओर ले जाती हैं।

उत्तर–समग्र शिक्षा के लिए गतिविधियों के माध्यम से मूल्य संवर्धन आवश्यक है। ऐसी विभिन्न गतिविधियाँ हैं, जो साझा की गई जानकारी के आधार पर प्रभावी ढंग से मूल्य संवर्धन की ओर ले जाती हैं। उनमें से प्रमुख हैं–

1. कहानी सुनाना और प्रासंगिक पाठों का वर्णन–कहानी सुनाना बच्चों में मूल्यों को प्रसारित करने का एक शक्तिशाली उपकरण है। शिक्षक कहानियाँ, कविताएँ या धार्मिक ग्रंथों के अंश सुना सकते हैं, जो अच्छे कार्यों और नैतिक मूल्यों के महत्त्व पर जोर देते हैं। ये कहानियाँ न केवल मनोरंजन करती हैं, बल्कि सार्थक सीख भी देती हैं, जिनसे बच्चे जुड़ सकते हैं और सीख सकते हैं। कहानी सुनाना बच्चों की कल्पनाओं और भावनाओं को शामिल करता है, जिससे अमूर्त मूल्य मूर्त और प्रासंगिक बनते हैं। उदाहरण के लिए, विविध सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की कहानियाँ सहानुभूति, विविधता के प्रति सम्मान और नैतिक सिद्धांतों की समझ को बढ़ावा दे सकती हैं। बच्चे कहानियों में पात्रों और उनके अनुभवों के माध्यम से ईमानदारी, दयालुता, साहस और करुणा के बारे में सीख सकते हैं। शिक्षक बच्चों को उनकी पसंदीदा कहानियाँ या मूल्यों से संबंधित व्यक्तिगत अनुभव साझा करने की अनुमति देकर कहानी कहने में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं। यह सक्रिय भागीदारी सीखने को सुदृढ़ करती है और बच्चों को नैतिक पाठों को आत्मसात करने के लिए प्रोत्साहित करती है।

2. रोल प्ले और ड्रामा–रोल प्ले और ड्रामा इंटरैक्टिव गतिविधियां हैं, जो मूल्यों को समझने और अभ्यास करने के लिए व्यावहारिक अनुभव प्रदान करती हैं। रोल-प्ले के माध्यम से, बच्चे विभिन्न भूमिकाओं और परिदृश्यों में कदम रखते हैं, नैतिक दुविधाओं और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं का प्रत्यक्ष अनुभव करते हैं। उदाहरण के लिए, बच्चे ऐसे दृश्य प्रस्तुत कर सकते हैं, जो निष्पक्षता, सहयोग या संघर्ष समाधान को दर्शाते हैं। भूमिकाएँ निभाने और साथियों के साथ बातचीत करने से उनमें सहानुभूति, संचार कौशल और समस्या-समाधान की क्षमताएँ विकसित होती हैं। नाटक गतिविधियाँ बच्चों को रचनात्मक और गतिशील तरीके से मूल्यों का पता लगाने, भावनात्मक बुद्धिमत्ता और सामाजिक जागरूकता को बढ़ावा देने की अनुमति देती हैं। भूमिका निभाना परिप्रेक्ष्य लेने को भी प्रोत्साहित करता है, क्योंकि बच्चों को विभिन्न दृष्टिकोणों और कार्यों के परिणामों पर विचार करना चाहिए। यह आलोचनात्मक सोच और नैतिक तर्क विकसित करता है, जिससे बच्चे सूचित और जिम्मेदार विकल्प चुन पाते हैं। इसके अलावा, नैतिक मूल्यों से संबंधित कहानियों या महाकाव्यों पर आधारित नाटकों का मंचन कलात्मक अभिव्यक्ति और सहयोगात्मक शिक्षा के लिए एक मंच प्रदान करता है। यह टीम वर्क को बढ़ावा देता है और बच्चों में आत्मविश्वास पैदा करता है, उन्हें प्रदर्शन

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com